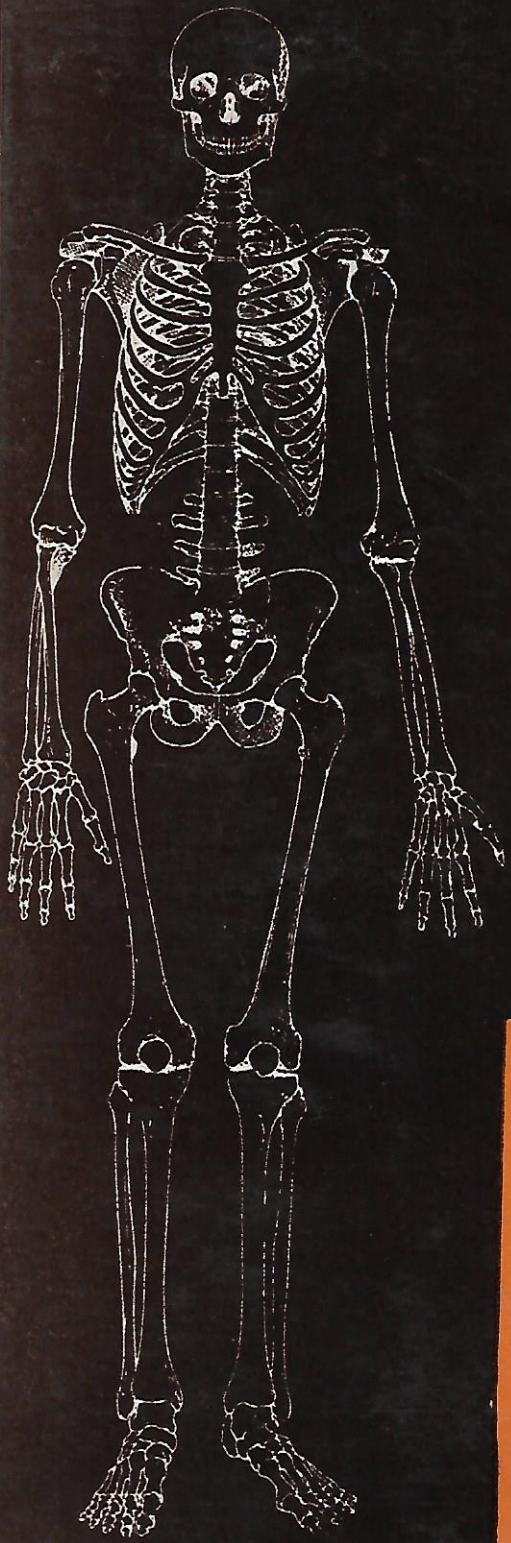

मानव शरीर रचना

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

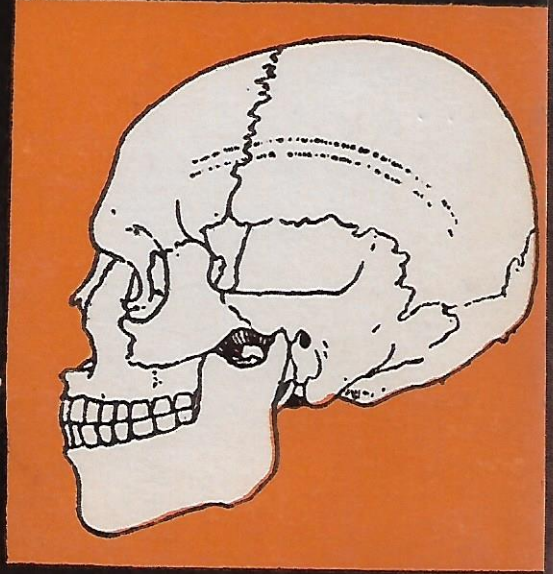

मानव-शरीर-रचना

द्वितीय भाग

लेखक

डा० मुकुन्दस्वरूप वर्मा

बी० एस-सी०, एम० बी० बी० एस०

भूतपूर्व प्रधानाचार्य, आयुर्विज्ञान महाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सम्पादक

डा० रमेशचन्द्र गर्ग

सहायक निदेशक (आयुर्विज्ञान), केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार

University Department of Yoga RU
No/PGDY/224
Library

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना बंगलौर मद्रास

विषयानुक्रमणिका

1. **संधि प्रकरण** (Syndesmology)

तांतव संधियां 551
उपास्थि संधियां 553
श्लेषक संधियां 554
गतियां तथा संधियों का प्रक्रम 557
शंख-अधोहनु संधि 560
शर-अधोहनु संधि 562
पृष्ठवंश की संधियाँ 564
कशेरुका चापों की संधियां 567
त्रिकानुत्रिक संधि 571
शीर्षधर-अक्षक संधि 572
शीर्षधर-पश्चकपाल संधियां 574
पर्शुका-कशेरुक संधियां 576
पर्शुक-अनुप्रस्थ प्रवर्ध संधियां 578
उरः पर्शुक संधियां 579
अन्तरा-उपास्थि संधियां 580
प्रर्शुक-उपास्थि संधियां 580
उरोस्थि संधियां 580
उरो-जत्रुक संधि 583
अंसकूट-जत्रुक संधि 585
स्कंध संधि 588
कूर्पर संधि 593
अन्तराप्रकोष्ठ संधियां 598
मणिबंध संधि 602
अन्तरामणिबंध संधियां 604
मणिबंध-करभ संधियां 608
करभ-अंगुल्यस्थि संधियां 610
अन्तरांगुलि संधियां 612
त्रिक-श्रोणिफलक संधि 613
नितम्ब संधि 618
जानु संधि 624
अन्तराजंघिका संधियां 635
गुल्फ संधि 638
अन्तरापदकूर्च संधियां 641
पदकूर्च-प्रपदास्थि संधियां 647
अन्तराप्रपदिका संधियां 648
प्रपद-अंगुल्यस्थि संधियां 649
अन्तरांगुलि संधियां 650
पदचाप 652

2. **मांसपेशी प्रकरण** (Myology)

मांसपेशी तंतुओं के प्रकार 654
पेशियों के संलाग 655
पेशी का संकुचन 656
कंडरा, कंडराकला और प्रावरणी 659
शिर की प्रावरणी और पेशियां 662
अधिकरोटि कंडराकला 663
नेत्रच्छदों की पेशियाँ 664
नासिका की पेशियां 665
मुख (वक्त्र) की पेशियां 666
चर्वण की पेशियां 671
ग्रीवा के अग्र-पार्श्व प्रान्त की पेशियां और प्रावरणियां 675
उपरिस्थ और पार्श्व ग्रैव पेशियां 677
अधिकंठिका तथा अवकंठिका पेशियां 679
पूर्व कशेरुकीय पेशियां 683
पार्श्व कशेरुकीय पेशियां 685
धड़ की प्रावरणियां और पेशियां 686
पीठ की गभीर पेशियां 686
वक्ष-कटि (कटि) प्रावरणी 687
अवपश्चकपाल पेशियां 694
अवपश्चकपाल त्रिभुज 695
वक्ष की पेशियां 696

मध्यच्छद पेशी 699
श्वसनक्रिया में वक्ष की गतियां 702
उदर की पेशियां-अग्र-पार्श्व पेशियाँ 704
उपरिस्थ वंक्षण वलय 706
गभीर वंक्षण वलय 717
वंक्षण नलिका 717
पश्च पेशियां 718
श्रोणि की पेशियां 719
मूलाधार की पेशियां 723
गुदक्षेत्र की पेशियां 724
मूत्रजनन क्षेत्र की पेशियां 725
(पूरुष में) 725
मूलाधार पिंड 727
ऊर्ध्व शाखा को कशेरुकादण्ड से जोड़ने वाली पेशियां 730
कटि त्रिकोण 733
ऊर्ध्व बाहु को वक्ष की अग्र और पार्श्व भित्तियों से जोड़ने वाली पेशियां 734
स्कंध की पेशियां 739
ऊर्ध्व बाहु की पेशियां 743
अग्रबाहु की पेशियां 749
अग्र प्रगंडपूर्व पेशियां 750
उपरिस्थ समूह की पेशियां 750
गभीर समूह की पेशियां 756
पश्च प्रगंडपूर्व पेशियां 758
गभीर समूह 765
हाथ की पेशियां 768
करतल की पार्श्व पेशियां 774
करतल की अभिमध्य पेशियां 777
करतल की माध्यमिक पेशियां 778
अधःशाखा प्रावरणी और पेशियां 781
श्रोणिफलक प्रान्त की पेशियां 781
ऊरु की पेशियां-अग्र और्वी पेशियां 785
अभिमध्य और्वी पेशियां 791
नितम्ब प्रदेश की पेशियां 794
पश्च और्वी पेशियां 802
जंघा की पेशियां-अग्र जंघा पेशियां 804
पार्श्व जंघा पेशियां 808
पश्च जंघा पेशियां 811
पांव की पेशियां
पादपृष्ठ की पेशियां 821
पादतल की पेशियां 822

3. **वाहिका प्रकरण** (Angiology)
रक्त वाहिकाओं की संरचना 833
शिराओं के वाल्व या कपाटिकायें 837
धमनी-शिरा सम्मिलन 839
वक्ष गुहा 839
परिहृद् 841
हृदय 843
दक्षिण अलिंद 846
निम्न महाशिरा 847
हृद् शिरानाल 847
दक्षिण निलय 849
वाम अलिंद 852
वाम निलय 852
हृदय का अंगरेखांकन 855
हृदय का संवहन तंत्र 857
शिरानाल-अलिंद पर्व 858
अलिंद-निलय पर्व 859
गर्भरक्त परिसंचरण 860
जन्म के पश्चात् वाहिका तंत्र में परिवर्तन 862
धमनियां (Arteries) 865
फुप्फुस धमनी प्रकांड 866
महाधमनी 867
महाधमनी चाप 869
प्रगंड-शीर्ष कांड 871
शिर और ग्रीवा की धमनियां 871
सामान्य कैरोटिड धमनियां 872
ग्रीवा का अग्र त्रिभुज 886
ग्रीवा का पश्च त्रिभुज 888
धमनी वृत्त 897
मस्तिष्क की धमनियां 898

ऊर्ध्व शाखा की धमनियां 898
कक्षा 907
कफोणि खात 913
धड़ की धमनियां 926
उदर महाधमनी 929
कटि धमनियां 942
सामान्य श्रोणि फलक धमनियां 943
अधःशाखा की धमनियां 954
शिरायें (Veins) 974
फुप्फुस शिरायें 974
दैहिक शिरायें 974
हृदय की शिरायें 974
शिर और ग्रीवा की शिरायें 976
डिप्लोई या द्विपत्रक मध्या शिरायें 984
तानिका शिरायें 984
मस्तिष्क की शिरायें 985
दृढ़ तानिका के शिरानाल 987
अग्र-निम्न समूह के शिरानाल 990
उद्गत शिरायें 993
ऊर्ध्व शाखा तथा वक्ष की शिरायें 994
ऊर्ध्व शाखा की उपरिस्थ शिरायें 994
ऊर्ध्व शाखा की गंभीर शिरायें 995
वक्ष की शिरायें 997
अधःशाखा, उदर तथा श्रोणि की शिरायें 1003
अधःशाखा की उपरिस्थ शिरायें 1003
अधःशाखा की गभीर शिरायें 1006
प्रतिहारिणी शिरा तंत्र 1014
लसीका तंत्र (Lymphatics) 1018
लसीका वाहिकाओं की संरचना 1019
लसीका पर्व 1021
लसीका महावाहिनी 1022
शिर और ग्रीवा का लसीका संवहन 1025
शिर और ग्रीवा के गभीर ऊतकों का लसीका संवहन 1029
ऊर्ध्व शाखा का लसीका संवहन 1032
उपरिस्थ वक्षण लसीका पर्व 1036
उदर तथा श्रोणि का लसीका संवहन 1039
पुरो महाधमनी लसीका पर्व और उनका संवहन क्षेत्र 1040
बृहदांत्र के लसीका पर्व 1044
बृहदांत्र का लसीका संवहन 1045
पुरुष जननेन्द्रियों का लसीका संवहन 1048
स्त्री जननेन्द्रियों का लसीका संवहन 1048
वक्ष का लसीका संवहन 1049
वक्ष के आभ्यन्तरांगों का लसीका संवहन 1051
हृदय का लसीका संवहन 1052
फुप्फुसों और प्लूरा का लसीका संवहन 1053
प्लीहा 1054
पर्यायवाची शब्दावली 1061

भारत भैषज्य रत्नाकर

(५ भागों में)

सं० रसवैद्य नगीनदास छगनलाल शाह

वैद्य गोपीनाथ गुप्त कृत हिन्दी व्याख्या सहित

आयुर्वेदीय साहित्य में फार्माकोपिया के आभाव को ध्यान में रखकर इस ग्रन्थ की रचना की गई है। इसमें क्वाथ, चुर्ण, अवलेह, गुटिका, घृत, तेल, रस इत्यादि प्रकरणों में विभक्त दस सहस्र से अधिक प्राचीन एवं अर्वाचीन प्रयोगों का संग्रह सैंकड़ों ग्रन्थों का मंथन करके किया है।

इस ग्रन्थ में कोश-शैली का अनुसरण किया गया है जिससे इष्ट प्रयोग बिना किसी कठिनाई के ढूंढा जा सकता है। भिन्न-भिन्न ग्रन्थों और पृथक्-पृथक् अधिकारों में एक नाम के जितने प्रयोग पाये जाते हैं वे सब इसमें आ गये हैं। रोगानुसारिणी सूची 'चिकित्सापथ-प्रदर्शनी' नाम से अंत में दे दी गई है जिससे इस ग्रंथ की व्यावहारिक उपयोगिता बहुत बढ़ गई है।

आधुनिक चिकित्साशास्त्र

धर्मदत्त वैद्य

इस ग्रन्थ की यह विशेषता है कि इसमें आधुनिक कायचिकित्सा के वर्णन के साथ-साथ आयुर्वेदिक कायचिकित्सा का भी उल्लेख है। ये दोनों एक-दूसरे के सहायक सिद्ध हुए हैं। जहाँ आधुनिक कायचिकित्सा How के प्रश्न का समाधान करती है वहीं आयुर्वेदिक कायचिकित्सा Why के प्रश्न का समाधान करती है अर्थात् रोग का मूल कारण बताती है, जिसके फलस्वरूप चिकित्सा सुगम और ठीक होती है। यह स्पष्ट बताती है कि शरीर के तीन मूल तत्त्व—देहाग्नि, देह-प्राण तथा देहवृद्धि हैं। इनके किसी अंग में मन्दता आ जाने से रोगोत्पत्ति होती है। इसमें रोगों के निदान, कारण, लक्षण और उनके भेद-प्रभेद बताकर साथ ही उनकी उचित चिकित्सा का मार्ग-दर्शन किया गया है। समस्त रोगों के सूक्ष्म लक्षणों पर प्रकाश डालते हुए तदनुसार औषधियों का भी निर्देश किया गया है। इसलिए यह नवीन पद्धति पर निर्मित एक महान ग्रन्थ है।

किस प्रकार की औषधि कहां लाभ पहुँचा सकती है, स्त्रियों, पुरुषों एवं बच्चों के विभिन्न रोगों में विभिन्न प्रकार की कौन-सी औषधि रामबाण सिद्ध हो सकती है ये सब बातें अनुभवी लेखक ने इस पुस्तक में विस्तार से बताई हैं।

DROLIA PUSTAK BHANDAR
Yoga, Ayurveda, Religious Books & Satkarma
Acupressure evam Magnate Goods
09458949381, 01334-260614,09837300687
Near Bharat Mata Mandir, Haridwar-249410 (U.K.) INDIA
E-mail : drolia_books@yahoo.co.in
Website : www.droliabooks.com

...ाल बनारसीदास

MLBD ₹300.00

...जिल्द)

ISBN 81-208-226...

9788120822689